

βλον | Δαμιανῶ ὑπατικοῦ | καὶ Φλαβίου Φαίδρου | ὑπατικοῦ, καὶ |  
 συγγενῆν Μενυλλίου<sup>1</sup> | Ἀττάλου ὑπατικοῦ, | ἀνθυπάτου Ἀσίας, | ἀν-  
 εψιαδῆν Κλαυδίου | Ἀττάλου Πατερκλια|νοῦ ὑπατικοῦ, | ἡγεμόνος  
 Βειθυρίας, | Γάιος ὁ πραγματευτῆς | τὸν ἀνδριάντα | ἀνέστησεν ἐν  
 τῷ ἐρ[γ]ῷ<sup>2</sup> | τῷ ἰδίῳ αὐτῆς.

*Trallibus (Mich. Pappaconstantinu ath. Mitth. 1896 p. 112). — 1) Vix recte excerptum. — 2) ερω excerptum est; editor confert CIGr. 2782: [ἐν] ἰδίῳις ἔργοις ἀνέστησαν; Ath. Mitth. 1890 p. 247, 1.*

8837 Τιτ. Αἰλ. Ναιβ. Ἀντώνιον | Σεβῆρον | τὸν λαμπρότατον  
 ὑπατικόν<sup>1</sup>, | τὸν εὐεργέτην, | Ἰούλιου Ἰουλιανὸς φρ.<sup>2</sup> | καὶ Οὐαλεντεῖ-  
 νος χ. λεγ.<sup>3</sup> | κανδιδάτοι αὐτοῦ<sup>4</sup>, | τὸν ἐν πᾶσιν ἀληθῆ | . .

*Romae (Inscr. Gr. Sicil. Ital. 1074 vidit Henzen). — 1) Eidem viro, sed non-  
 dum consulari, positus est titulus urbanus VI 1332, propinquis eius VI 1469. 1470.  
 9147. — 2) Φρονμεντάριος. — 3) Ἐκατόνταρχος λεγιωνάριος. — 4) Cf. supra  
 N. 1174 fin. Momms. eph. ep. 4 p. 552 nol. 2.*

8838 Ζμίνθι.<sup>1</sup> | Τὸν λαμπρότατον | πρεσβευτὴν καὶ | ἀντιστρά-  
 τηγον<sup>2</sup> | Αὐφιδίου Κορέσιν|ον Μάρκελλον | ἡ πόλις.

*Ksar Banlo in Pisidia, ubi fuit Adada (CIGr. 4579<sup>d</sup>; Sterrett papers of the Ameri-  
 can school of Athens III p. 298 n. 419). Cognat inscr. Gr.-Rom. III 567. — 1) Signum  
 hominis (idem supra N. 7364). — 2) Eidem legato (Lyciae et Pamphyliae ut vi-  
 detur) positus est t. Sogallassensis Inscr. Gr.-Rom. III 557. Legatus legionis primae  
 Minerviae fuerat a. 222 (Brambach 464).*

8839 Μᾶρμον Κλα[ύδιον]<sup>1</sup> | Πουπιῆνον Μ[άξ]ιμο[ν] | τὸν λαμ-  
 πρότατον | τῆς Ἀσίας ἀνθύ[πα]τον, | Κλαύδιος | Θεμιστοκλ[ῆς] υἱὸς |  
 Κλαυδίου | Φροντωνι[α]νοῦ | τὸν ἴδιον εὐεργέτην.

*Ephesi (Domaszewski Festschrift f. Th. Gomperz p. 235). Dittenberger Orient.  
 inscr. n. 518. — 1) Sic, non Κλωδ-, videtur fuisse in lapide. — 2) Videtur is qui  
 a. 238 ad imperium evectus est. Cf. supra N. 496; Prosopogr. imp. Rom. I p. 418  
 n. 929. Ad filium eius videtur pertinere titulus supra N. 1185.*

8840 τὸν λαμπρότατον | Τιβ. Πωλλῆνιον Ἀ[ρμέ]νιον Περιεργεῖ-  
 νο[ν] | τὸν εὐγενέστατον | ὠρδινάριον ὑπατον<sup>1</sup> | καὶ ὑγιέστατον  
 ἀνθ. | τῷ κοινῷ δόγματι τοῦ λαμπροτάτου τῶν Λυ[κ]ίων ἔθρους  
 Μ. Αὐρ. | Διονύσιος ὁ Λυκιάρχης καθ' ἃ ἐν τῷ κο[ι]νοβουλίῳ<sup>2</sup>  
 ὑπέσχ[ε]το.

*Tlo in Lycia (Arch. ep. Mitth. 49, 1896 p. 149). Cognat inscr. Gr.-Rom. III 556,  
 Dittenberger Orient. inscr. 568. — 1) A. p. Chr. 244. — 2) Cf. supra N. 8820.*

8841 . . . . ε|. . . . . μι . . . . . ανιατ| . . [Πολληνία]ν<sup>1</sup> Ὀ[ν]ωράταν,  
 ἐχγόνη[ν] | Φλ. Λατρωνιανῶ ὑπατικοῦ, | ποντίφικος, ἐπάρχου Ῥώ-  
 μης, | [κ]αὶ Αὐσπικος ὑπατικοῦ Βρετανίας Μυσίας<sup>2</sup> Σακίας Σπα-  
 νίας<sup>3</sup>, ἐν χώρᾳ Σεβαστοῦ δικά[σαντος]<sup>4</sup>, προεχγόνη<sup>5</sup> Αὐσπι[κος]<sup>6</sup> ὑπα-  
 τικοῦ, ἀνθυπάτου | Ἀφρικής, ἐπάρχου ἀλειμέντων Ἀππίας καὶ